सव्य आङ्गिरसः। इन्द्रः। जगती।

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे।

अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम्॥ १.०५७.०१

प्रवणे- निम्नप्रदेशे। अपाम्- उदकस्य। दुर्धरमिव- दुर्धरपतनमिव। यस्य। राधः- संसिद्धिः। राध संसिद्धौ। अनिवार्या। विश्वायु- विश्वेषामायुर्भूता। शवसे- बलाय। अपावृतम्- अनावृता। मंहिष्ठाय- महात्मने। महि वृद्धौ। बृहते- महते। सत्यशुष्माय- सत्यबलाय। तवसे- प्रवृद्धाय। बृहद्रये- महते दानयोग्यधनाय। मतिम्- चित्तम्। प्र- प्रकर्षेण। भरे- संपादयामि ॥१॥

अध ते विश्वमनु हासदिष्टय आपो निम्नेव सवना हविष्मतः।

यत्पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्नथिता हिरण्ययः॥ १.०५७.०२

यत्- यदा। हर्यतः- कामयतः। इन्द्रस्य- ईशनशीलस्य। हिरण्ययः- ज्योतिर्मयः। श्नथिता- शत्रुहिंसकः। वज्रः। पर्वते- जडप्रतीकगिरौ मेघे वा। न समशीत- असुप्तः। तद्भेदनार्थं जागरूकः। तदा। अध- तदनन्तरम्। विश्वम्- सर्वम्। ते- भवतः। इष्टये- इच्छायै। अनु असत्- अन्वभवत्। ह- आश्चर्यम्। हविष्मतः- कर्मध्यानभावनादिहविष्कस्य। सवना- अभिषवाः। निष्पन्नरसाः। आपः। निम्ना इव- निम्नभागं यथा। भवन्तमाश्रयन्ते ॥२॥

अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे।

यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे॥ १.०५७.०३

अयसे- गत्यै। हरितो न- अश्वानिव। आकर्षणशक्तीरिव। यस्य। धाम- स्थानमृताख्यम्। श्रवसे- चिदाकाशस्थमन्त्रश्रवणाय। इन्द्रियं नाम ज्योतिः- इन्द्रशक्त्याख्यज्योतिः। अकारि- क्रियते। अस्मै- तादृशाय। भीमाय- शत्रुभयङ्कराय। पनीयसे- मन्त्रयोग्याय। अध्वरे- विश्वशान्तिकर्मणि। शुभ्रे- शोभने। उषः- ज्ञानोदयदेवते। आ- समन्तात्। सं भर- सम्यक् संपादय ॥३॥

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।

नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः॥ १.०५७.०४

पुरुष्टुत- बहुस्तुत। प्रभूवसो- प्रभूतसंपत्संपन्न। इन्द्र- इन्द्रियेशनशील। ये। त्वा- त्वाम्। आरभ्य- अवलम्ब्य। चरामसि- चरामः। ते इमे वयम्। गिर्वणः- मन्त्राश्रय। त्वदन्यः। गिरः- मन्त्रान्। नहि सघत्- न प्राप्नोति। क्षोणीरिव- भूमिमातेव। नः- अस्माकम्। वचः- मन्त्रान्। प्रति हर्य- कामय ॥४॥

भूरि त इन्द्र वीर्यं१ तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन्काममा पृण।

अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे॥ १.०५७.०५

इन्द्र- इन्द्रियेशनशील। ते- भवतः। वीर्यं- पराक्रमः। भूरि- प्रभूतः। तव- भवतः। स्मसि- स्मः। मघवन्- संपद्वन्। स्तोतुः- मन्त्रविदः। कामम्- इच्छाम्। आ पृण- आपूरय। पृण प्रीणने। ते- भवतः। वीर्यम्। बृहती- महती। द्यौः। अनु ममे- अन्वमंस्त। माङ् माने। इयं पृथिवी- एषा भूमिरपि। ते- भवतः। ओजसे- बलाय। नेमे- ननाम। णमु प्रह्वत्वे ॥५॥

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वशश्चकर्तिथ।

अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः॥ १.०५७.०६

वज्रिन्- वज्रधर। इन्द्र- ईशनशील। त्वम्। महाम्- बृहन्तम्। उरुम्- विस्तीर्णम्। पर्वतम्- जडप्रतीकमेघं गिरिं वा। पर्वशः। वज्रेण- स्वायुधेन। चकर्तिथ- कर्तनमकरोः। निवृताः- नितरामावृताः। अपः- चित्ताधारशक्तीः। सर्तवै- सरणाय। अवासृजः- अवाङ्मुखं ससर्जिथ। विश्वम्- सर्वम्। केवलम्- अनुपमम्। सहः- बलम्। दधिषे- धारयसि ॥६॥